विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १५ : अंक १० : नई दिल्ली : १४-२० जून २००६

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी के २३वें महाप्रयाण दिवस पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा समुच्चारित गीत

प्रभुवर! पदचिह्न तुम्हारा, मेरा आधार है।
पद दृश्य नहीं है स्वामिन्! वह तो साकार है ॥

१. तुमने निहारा जग को, उस आंख की आशा।
प्यासा है मानव पग-पग, दुर्लभ जलधार है ॥

२. तुमने भुलाया जग को, जग भूल नहीं पाया।
यह दिव्य शक्ति का प्रभुवर! कैसा व्यवहार है? ॥

३. कितने हमारे सहचर, उपवास करते हैं।
क्यों नहीं भेजते फिर भी, सुखपृच्छा तार है?
(क्यों नहीं जुड़ा है फिर भी सुखपृच्छा तार है?)

४. 'तुलसी विचार दर्शन' जीवन का त्राण हो।
मानवता की रक्षा का, अनुपम उपचार है ॥

५. ओ क्रान्तधर्म के वक्ता! पूरा समर्पण है।
यह महाप्रज्ञ का, सबका, हार्दिक उपहार है।
प्रतिपल तुम साथ रहो यह, रसमय मनुहार है ॥

लय : प्रभु! पार्श्वदेव चरणों में

संस्मरणों का वातायन : आचार्यश्री तुलसी

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर और प्रेक्षाध्यान (७७८)

"बीसवीं सदी की ज्वलन्त समस्याओं में एक व्यापक समस्या है हिंसा की बढ़त। प्रश्न है कि हिंसा क्यों बढ़ रही है? असुरक्षा का भाव, प्रतिशोध की मनोवृत्ति, विषमता, अभाव आदि अनेक कारण हैं, जिनसे अभिप्रेरित होकर व्यक्ति हिंसक/आक्रामक बनता है। मनोविज्ञान की भाषा में कहा जा सकता है कि जब व्यक्ति की सोच नकारात्मक हो जाती है, उसके जीवन से उत्सव का क्षय हो जाता है, तब हिंसा उपजती है। हिंसक वारदातों के प्रति असामान्य उत्सुकता कच्ची वयस वाले किशोरों को वैसा ही कुछ करने के लिए उत्तेजित कर देती है। इस समस्या को जड़ से उखाड़ने की बात की जाती है। पर इसकी संभावना बहुत कम है। क्योंकि हिंसा एक शाश्वत समस्या है।

हिंसा शाश्वत है, इसलिए उसको रोकने का प्रयास ही न किया जाए, यह कोई समाधायक विचार नहीं है। हिंसा शाश्वत है तो अहिंसा भी शाश्वत है। अपेक्षा है हिंसा के मुकाबले में अहिंसा को तेजस्वी बनाने की। दुनियाभर में हिंसा के क्षेत्र में शोध, प्रशिक्षण और प्रयोग का सिलसिला चल रहा है। ऐसे नए-नए हथियार बनाए जा रहे हैं, जिनसे हिंसा आसान होती जा रही है। किन्तु अहिंसा पर रिसर्च कहां होती है? उसके प्रशिक्षण की व्यवस्था कहां है? अहिंसा के प्रयोग कौन करता है? विगत कई वर्षों से ये प्रश्न मेरे मानस को उद्वेलित कर रहे हैं। अहिंसा-प्रशिक्षण का मेरा सपना इसी उद्वेलन की निष्पत्ति है।

२१, २२, २३ फरवरी १९९२ को जैन विश्वभारती में गांधी दर्शन और अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन था। गांधी स्मृति समिति द्वारा आयोजित इस शिविर में विभिन्न राज्यों से विद्यार्थियों ने भाग लिया। समिति के निदेशक श्री एन. राधाकृष्णन स्वयं शिविर में उपस्थित थे। श्री राधाकृष्णन गत वर्ष राजसमंद में समायोजित अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में आए थे। उसके बाद वे पत्रों के माध्यम से बराबर हमारे सम्पर्क में रहे। अहिंसा प्रशिक्षण की कल्पना उन्होंने की उसके लिए जैन विश्वभारती को चुना गया।

त्रिदिवसीय प्रशिक्षण का क्रम व्यवस्थित रूप में चला। कुछ प्रशिक्षकों ने अपने शोध प्रबन्ध पढ़े। प्रश्नोत्तरों के माध्यम से विषय को स्पष्ट किया गया। कुछ प्रशिक्षकों ने प्रयोग करवाए। प्रशिक्षण और प्रयोग की समन्विति से विद्यार्थियों को नई दिशा प्राप्त हुई। कतिपय प्रशिक्षण कक्षाओं में हमने भी सान्निध्य दिया। हमारे विचारों का विद्यार्थियों पर अच्छा प्रभाव रहा। जैन विश्वभारती का शान्त प्रांगण और पवित्र वातावरण भी इसमें निमित्त बना। राधाकृष्णनजी ने अनुरोध किया कि यहां अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया जाए और संभव हो तो प्रतिमास एक शिविर लगाया जाए।

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में मध्य केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर किंग भी आए। वे अहिंसा में विश्वास रखते हैं। अहिंसा प्रशिक्षण का कार्यक्रम उन्हें बहुत पसन्द आया। जाने से पहले वे थोड़ी देर मेरे उपपात में बैठे। उन्होंने कहा 'आचार्यजी! मैं एक सप्ताह यहां रहा। यह सप्ताह मेरे जीवन का अविस्मरणीय काल रहेगा। अहिंसा को जानने/समझने के लिए मैं अनेक स्थानों पर गया, पर ऐसा सुखद अनुभव कहीं नहीं हुआ। दूसरी बात, दुनिया में बहुत विश्वविद्यालय हैं। किन्तु चरित्र-निर्माण का काम कहीं नहीं हो रहा है। इस दृष्टि से मैं आपके विश्वविद्यालय को अद्वितीय मानता हूं। स्थिति यह है कि चारों ओर समस्या ही समस्या है। कहीं समाधान दिखाई नहीं देता। यहां मुझे समाधान का आलोक मिला है, इसलिए मेरा आना सार्थक हो गया। जैन दर्शन के अनेकान्त ने मुझको प्रभावित किया है। में उसको फैलाने का प्रयत्न करूंगा। एक बात और है, इन वर्षों में मैं अपने आपको बूढ़ा मानने लग गया था। पर यहां मैंने देखा कि आप उम्र में मेरे से बड़े हैं और अधिक श्रम करते हैं। आपको देखकर मेरी भ्रान्ति मिट गई। अब मैं पूरे उत्साह के साथ काम करूंगा।'

२४ फरवरी का मंगल प्रभात। मर्यादा महोत्सव के दिन की गई उद्घोषणा के अनुसार आज साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा को फाल्गुन एवं चैत्र, दो महीनों की स्वल्पकालीन यात्रा के लिए प्रस्थान करवाया। इक्कीस साध्वियां सहवर्ती रहीं। आज सुजानगढ़ में साध्वियों की संख्या बत्तीस हो गई। कल चाड़वास और परसों बीदासर। तीन दिन वहां रुककर नोखामंडी की ओर विहार करेगी। बीकानेर का पूरा चौखला स्पर्श कर श्रीडूंगरगढ़, राजलदेसर

आदि क्षेत्रों की संभाल कर चैत्री पूनम तक पुनः लाडनूं पहुंचेगी, ऐसी संभावना है।

यह पहला ही अवसर है कि महाश्रमणी महानिदेशिका के रूप में यात्रा कर रही है। क्षेत्रों में सेवाकेन्द्रों, भले वह साधुओं का भी हो, की संभाल करेगी। अन्यत्र भी पूरी व्यवस्था का चिन्तन तथा विवरण प्रस्तुत करेगी। इस यात्रा को एक महत्त्वपूर्ण यात्रा का रूप मिला है। इसका बहिर्विहार में जाना कितना कठिन है, यह मैंने जाना, फिर भी भेजा है।

२६ फरवरी को रात्रि में नींद उचट गई। पौने बारह बजे महाश्रमण को जगाया। उसने कायोत्सर्ग करवाया। घंटा-सवा घंटा बाद नींद आई। कुछ वैसा ही निमित्त बन गया। कभी-कभी कोई घटना प्रभावित कर लेती है।

२८ फरवरी को समाज के चिन्तनशील व्यक्तियों के साथ कुछ बिन्दुओं पर चिन्तन किया। आज के युग की अनेक समस्याएं हैं। समस्याएं जटिल हैं। समाधान कठिन है। संघीय दृष्टि से चिन्तन आवश्यक है। बीमारियां बढ़ रही हैं। दवाइयां और डॉक्टर दुर्लभ होते जा रहे हैं। दवाइयां सहज नहीं मिलतीं। उनका मूल्य मांगा जाता है। इस स्थिति में क्या किया जाए? विहार में, विशेष रूप से साध्वियों के विहार में कई कठिनाइयां उपस्थित हो रही हैं। सेवाकेन्द्रों में पंचमी समिति के लिए स्थान मिलना कठिन हो रहा है। और भी अनेक समस्याएं हैं। समाधान चाहिए। हमने समणश्रेणी की स्थापना की। उसके सामने ये समस्याएं नहीं हैं। पर साधु-संस्था की दृष्टि से कुछ बातें विचारणीय तो हैं ही।

फरवरी का आखिरी दिन २९ तारीख है। यह दिन कभी-कभी आता है, चार वर्षों के बाद एक बार आता है। जिसका जन्म २९ फरवरी का हो, उसका जन्मदिन चार वर्ष में एक बार मनाया जाता है। मोरारजी देसाई का जन्म २९ फरवरी का है। इस बार मनाया गया। उन्हें पचपन लाख की थैली भेंट की गई, ऐसा सुना है। हमारे मुनि मधुकरजी की जन्म तारीख भी २९ फरवरी की है, ऐसा मुझे बताया गया। समय का प्रवाह कभी रुकता नहीं। वह अपनी गति से आगे बढ़ता रहता है।

१ मार्च को महाश्रमण मुदित ने उपवास किया। वह प्रत्येक महीने की पहली तारीख उपवास, मौन और ध्यान में बिताता है। इसमें आध्यात्मिकता और अनासक्ति नैसर्गिक है, कूट-कूटकर भरी है। यश, ख्याति और नाम की कोई भूख नहीं है। सहजतामय जीवन जीता है। दायित्व का निर्वाह अच्छी तरह करता है। मुझे सन्तोष है कि महाश्रमण और महाश्रमणी दोनों अपने-अपने स्थान पर उपयुक्त उपस्थित किए गए हैं।

२ मार्च, सोमवार। मुनि मोहजीत सतरह वर्षों से मुनि सुखलाल के साथ है। इस महोत्सव पर उसे मुनि गुलाब के साथ कर दिया। प्रस्तुत सन्दर्भ में मैंने कहा 'मुनि सुखलाल ने अच्छा परिचय दिया। मुनि मोहजीत को अपने पास रखने की एक बार भी प्रार्थना नहीं की।' मोहजीत बोला 'गुरुदेव! इसीलिए तो मेरा नाम मोहजीत है।' मैंने कहा 'सार्थक हो तुम्हारा नाम।' कल सायंकाल वन्दना के समय सब साधु एकत्रित थे, उस समय की यह घटना है। वातावरण अच्छा बन गया। हमारे धर्मसंघ में यह सारणा-वारणा की विधि है।

मध्याह्न में तीन बजे एक गोष्ठी हुई। चिन्तन का मुद्दा था ग्रीष्मकालीन शिविर। गोष्ठी का निष्कर्ष यह रहा कि तीन-चार सप्ताह का एक ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित हो। उसमें अन्यान्य प्रशिक्षणों के साथ ज्ञानशाला का प्रशिक्षण भी दिया जाए। अब इस विषय में निर्णय किया जाना है।

गत बुधवार से पूरे शरीर पर तैल मालिश की जा रही है। वैद्यों का अभिमत है कि इससे रक्त-संचार विधि को बल मिलेगा। इन दिनों पैरों में कुछ दुर्बलता आई है। वह भी ठीक हो जाएगी, ऐसा विश्वास है।

३ मार्च को चतुर्दशी का एकाशन किया। युवाचार्यजी ने अनुरोध किया कि एकाशन न किया जाए। पर उनका अनुरोध भी मान्य नहीं हुआ। महीने में चार एकाशन करना सब दृष्टियों से अच्छा रहता है।

४ मार्च, बुधवार। इस बार महाश्रमणी को प्रेक्षाध्यान के लिए विदा किया, तब हम खड़े होकर पांच कदम पहुंचाकर फिर बैठे। धर्मसंघ में यह पहला ही अवसर है, जब किसी साध्वी को इतना महत्त्व दिया गया हो, आचार्य पहुंचाने गए हों। पर कनक वास्तव में इन सबके योग्य है। इस तरह सर्वांग सम्पन्न साध्वी भी हमारे गण में यह प्रथम ही है, ऐसा कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा। यात्रा में उसके द्वारा लिखे गए पत्र भी पठनीय, मननीय एवं साहित्यिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण हैं। उन्हें हम सुरक्षित रखने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस यात्रा का महत्त्व भी अपने आप में बढ़ता जा रहा है। जहां कहीं भी जा रही है, लोग आश्चर्यचकित हो रहे हैं। आज शायद नोखा (जोरावरपुरा) पहुंच गई है।

५ मार्च को रात्रि में एक गोष्ठी हुई। भेलां (गुरुकुलवास) में स्हाज की क्या व्यवस्था हो, इस विषय पर चिन्तन चला। दो-दो साधुओं के स्हाज ठीक नहीं लगते। यह व्यवस्था वर्ग रूप में हो तो अच्छा रहे। इसमें कइयों को कठिनाई अनुभव हो रही है। पर सामंजस्य बिठाने का अभ्यास किया जाए, इस रूप में समझाया गया। व्यवस्था बिठानी है। चार-चार से अधिक संख्या का वर्ग हो, ऐसा चिन्तन किया गया है।

आज यहां से दो समण दिल्ली, अध्यात्म साधना केन्द्र गए हैं। वे कुछ समय वहां रहेंगे, फिर विदेश यात्रा का भी क्रम बन सकता है। समणी कुसुमप्रज्ञा आदि चार समणियां उत्तर प्रदेश की यात्रा पर प्रस्थित हो रही हैं।

६ मार्च, शुक्रवार। फाल्गुन शुक्ला द्वितीया का दिन। लोकभाषा में फुलड़िया दूज। पूज्य गुरुदेव कालूगणी का जन्मदिन। तयांलीस वर्ष पहले अणुव्रत एवं पारमार्थिक शिक्षण संस्था का उदय इसी दिन हुआ। संस्था ने आज अपना चौवालीसवां वार्षिक उत्सव मनाया। प्रातः प्रवचन में हम सब उपस्थित थे। कार्यक्रम अच्छा रहा। पौने बारह बजे तक चला।

अपने वक्तव्य में संस्था के बारे में मैंने कहा 'पारमार्थिक शिक्षण संस्था अजातशत्रु है। यह सबको प्रिय है। इसकी आलोचना कभी किसी ने नहीं सुनी। मैंने इसकी जैसी कल्पना की, वैसी ही साकार होती गई। मुझे प्रसन्नता है कि संस्था ने तयांलीस वर्ष पूरे कर लिए। इसकी स्वच्छ, शालीन और ऊंची छवि है। यह छवि इसी रूप में बनी रहे, ऐसा मैं चाहता हूं। इस संस्था का सौभाग्य है कि इसे समय-समय पर निष्ठाशील, दायित्वशील और चरित्रवान व्यक्ति मिलते रहे हैं।'

आज हमारा रात्रि प्रवास संस्था भवन में रहा। मुमुक्षु बहनों ने कई कार्यक्रम प्रस्तुत किए। संस्था गतिशील है। यह देखकर मनस्तोष हो रहा है। शैक्षणिक विकास के साथ आध्यात्मिक विकास भी होता रहे, यह अपेक्षित है।

७ मार्च, शनिवार। विष्णुदयाल गोयल का परिवार पूरा धार्मिक परिवार है। लाला चले गए। पीछे पुत्र भी वैसी ही जिम्मेदारी निभा रहे हैं। तीसरा पुत्र वृद्धिचन्द गोयल अभी-अभी आया है। वह विलक्षण व्यक्ति है, अद्वितीय युवक है। ऐसा उदार व्यक्ति हमने कम देखा है। करीब पन्द्रह वर्ष से प्रतिवर्ष अच्छा विसर्जन करता है। न नाम की भूख और न ख्याति की चाह। बल्कि इस बात से बिल्कुल परहेज रखता है। यह चिन्तन उसके कण-कण में समा गया है कि अर्जन के साथ विसर्जन होना चाहिए, अनिवार्य रूप से होना चाहिए।

८ मार्च को पूनमचन्दजी मोदी की धर्मपत्नी श्रीमती भंवरीदेवी को दर्शन देने गए। उनकी अवस्था छयांसी वर्ष की है। उन्होंने चौविहार संथारे की मांग की। 'उनके मन में संथारे की भावना क्यों पैदा हुई?' इस प्रश्न के उत्तर में वह बोली 'मुझे सेठ (पूनमचन्दजी) दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि पार होना है तो संथारा करो। इस प्रेरणा से मैंने अपने-आप संथारा स्वीकार कर लिया। अब आप कृपा कर प्रत्याख्यान करा दें।' मैंने पूछा 'अभी तो संथारा मांग रही हो। फिर खाना मांग लो तो...?' मेरी बात सुनकर श्राविकाजी ने हंसते हुए कहा 'गुरुदेव! आप भी कैसी बात कर रहे हैं? मेरा तो पक्का निर्णय है।' आखिर परिवारवालों की सहमति और वहां उपस्थित सब लोगों की साक्षी से यावज्जीवन चौविहार संथारा करा दिया।

मध्याह्न में अमृतायन में कम्प्यूटर कार्य देखने गए। दोपहर के समय चलने में कठिनाई होती है। पर आवश्यक काम करने ही होते हैं। कम्प्यूटर में आगम कैसे भरे गए हैं, उनका क्या उपयोग है, यह सब देखा। दशवैकालिक सूत्र में धम्मो शब्द कितनी बार आया है, इसी प्रकार साहू शब्द, अहिंसा शब्द कितनी बार प्रयुक्त हुए हैं, यह हमने देखा। सन्दर्भ सहित ठीक बतलाया गया है। हम देखते ही रह गए। मानव मस्तिष्क का कितना विकास हुआ है, आश्चर्य है।

अभी दो योजनाएं हमारे सामने आई हैं। प्रथम योजना यह है कि महावीर जयन्ती विशाल पैमाने पर मनाई जाए। दूसरी योजना के अनुसार यहां हर रविवार को अणुव्रत परिषद के रूप में बौद्धिक सम्मेलन रखा जाए। सम्मेलन में बाहरी क्षेत्रों के लोग भी आए। वे दिनभर रहें मुक्त चर्चाएं हों और सायंकाल तक सब लौट जाएं। योजनाएं सुन्दर हैं। व्यवस्था का प्रश्न चिन्तनाधीन है।

१० मार्च, मंगलवार। श्वास की बाधा ने मुझे पकड़ लिया। यात्रा प्रायः बन्द हो गई। महाश्रमणी की यात्रा चालू की गई। यात्रा बड़ी सफलता से आगे बढ़ रही है। महाश्रमणी खुलकर काम कर रही है। अच्छा अवसर है। हम दूर बैठे प्रसन्न हो रहे हैं। अपनी कृति का कर्तृत्व उजागर होते देखकर कौन प्रसन्न नहीं होगा।

११ मार्च, बुधवार। बिहार-बंगाल जानेवाला समणी-वर्ग कल मध्याह्न में यहां से विदा हो गया। अब एक राजस्थान वाला वर्ग बाकी रहा है। इस बार व्यवस्थित एवं स्थायी काम हो, ऐसा प्रयत्न है। श्रम व्यर्थ न जाए, इस दृष्टि से ध्यान देना आवश्यक है। कितनी सफलता और सार्थकता हो रही है, यह तो अगले वर्ष ही ज्ञात हो सकेगा।

१२ मार्च को भागलपुर विश्वविद्यालय में गांधी दर्शन विभाग के प्रोफेसर रामजीसिंह आए। चर्चा हुई। विश्वविद्यालय को एक यूनिक के रूप में प्रस्तुत किया जाए, यह हमारा सपना है। उसका प्रारूप क्या हो? उसको प्रायोगिक बनाने में बाधा क्या है? इन बिन्दुओं पर चिन्तन चला। मुनि महेन्द्र, महाश्रमण मुदित, युवाचार्य महाप्रज्ञ चिन्तन में सम्मिलित थे। काफी बातें स्पष्ट हो गई, फिर भी चिन्तन अधूरा रहा। आगे फिर चलेगा। यह तो निर्णीत है ही कि विश्वविद्यालय को अभिनव रूप दिया जाए। वह सादगी, संयम और श्रम-प्रधान हो। ज्ञान, दर्शन और चरित्र-प्रधान हो। कैसे हो, यह चिन्तन अभी बाकी है। कुछ जटिलता हो सकती है। चिन्ता क्या है, चिन्तन ही करना है। विश्वभारती की नियति है। अच्छा काम होना है। अच्छा ही होगा। अच्छा ही होना चाहिए। गुरुदेवः शरणम्, गुरुदेवः शरणम्।

१५ मार्च, रविवार। प्रेक्षाध्यान के उत्साहवर्धक संवाद प्रातः मिल गए। महाश्रमणीजी आगामी महावीर जयन्ती तक केन्द्र में पहुंचना चाहती है। हमने वैसी स्वीकृति दे दी है। कन्हैयालालजी छाजेड़ आज यहां से सन्देश लेकर गंगाशहर गए हैं। राकेश मुनि आज दिल्ली की ओर विहार कर रहे हैं। मोहन मुनिजी को रात यहां से एक सन्देश लिख दिया है। आज से तैल-मालिश बन्द कर रहे हैं। पन्द्रह-सोलह दिन मालिश का क्रम चला। पैरों की कमजोरी में विशेष अन्तर नहीं आया।

मोदीजी की पत्नी भंवरीदेवी का चौविहार संथारा आठवें दिन सम्पन्न हो गया। चामत्कारिक संथारा रहा। जैसा कहा, वैसा ही कर दिखाया। समणी स्मितप्रज्ञा की संसारपक्षीया बड़ी मां थी। आज प्रवचन में उनके बारे में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए मैंने कहा ‘भंवरी देवी मोदी के चामत्कारिक अनशन से मोदी परिवार में एक अभिनव काम हुआ है। उन्होंने संथारा बड़े साहस और मजबूत मनोबल से किया। उनकी मृत्यु महोत्सव बन गई। परिवार ने इस अवसर पर रूढ़ियों को प्रश्रय न देकर अच्छा कार्य किया है। उस प्रसंग में मैंने दो पद्य बनाकर सुनाए

१. पूनमजी मोदी की पत्नी भंवरी वय छंय्यासी,
चौविहार अनशन ‘चा’ पीकर अजब बात इतिहासी।
सेठ और स्वामीजी दिख्या, अब परभव जाणो है,
जीवनभर ना पाणी पीणो ना खाणो खाणो है ॥
२. दर्शन दे म्है घणां खराया, बोली बड़ी सतोली,
छूटी सारी मो-ममता री क्यारी आतम धो ली।
स्मितप्रज्ञाजी री बड़ियाजी, अद्‌भुत दृश्य दिखायो,
दिवस आठ में अनशन सीझ्यो, धर्मध्वज लहरायो ॥

मोमासर में श्राविका श्रीमती हुलासीदेवी कोठारी ने १८ फरवरी को चौविहार अनशन किया। नौवें दिन अनशन सम्पन्न हो गया। अनशन की सम्पन्नता के समय पूरा कमरा दिव्य प्रकाश से भर गया, ऐसा प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया। कोठारी परिवार दर्शन करने आया। उस अवसर पर मैंने कहा ‘मरते सब हैं, पर अनशनपूर्वक समाधिमृत्यु किसी भाग्यशाली को ही मिलती है। जिस किसी की समाधि मृत्यु होती है, उसके सम्पूर्ण जीवन का सार सामने आ जाता है। हुलासी देवी का चामत्कारिक अनशन ऐसा ही है। उसके अनशन की सम्पन्नता के समय हुए दिव्य चमत्कार को सबने अपनी आंखों से देखा। इस अनशन में भोजराजजी संचेती का अच्छा योगदान रहा।’

भोजराजजी संचेती को लक्ष्य करके मैंने कहा ‘भोजराजजी की अपनी पहचान है। ये जैन संस्कारक के रूप में प्रसिद्ध हैं। स्वमूत्र चिकित्सा के सफल चिकित्सक हैं। स्वमूत्र चिकित्सा में विश्वास रखनेवाले मोरारजी भाई देसाई रोगियों को इनके पास भेजते हैं। ये जैन संस्कारक ही नहीं, उसके प्रयोक्ता भी हैं। अपने घर

में भी कोई उत्सव या आयोजन जैन संस्कार विधि से ही करते हैं। अत्यधिक सम्पन्न न होने पर भी विसर्जन की भावना से भावित हैं। अपनी आवश्यकताओं को वैराग्यवृत्ति से कम करते हैं, यह इनकी धार्मिकता का लक्षण है।'

हर समाज की कुछ परम्पराएं होती हैं। परम्परा जब रूढ़ि बन जाती है, तब समाज पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इस सन्दर्भ में समाज के नाम एक विशेष सन्देश में मैंने कहा 'मृत्यु के बाद गंगा में फूल विसर्जित करना और यह मानना कि ऐसा करने से मरनेवाले की सद्‌गति होती है। इसी प्रकार गंगेड़ा करना, ब्रह्मभोज करना, लेनदेन करना आदि अनेक रीतियां ऐसी हैं, जो आज भी समाज में ज्यों की त्यों हैं। यह एक विचारणीय बात है। जैन कहलानेवाला जैन संस्कारों को महत्त्व न दे, यह ठीक नहीं है। यदि नई परम्परा अच्छी है तो पुरानी का भार क्यों ढोया जाए? समाज के प्रभावशाली व्यक्ति तथा सभा-संस्थाओं के अधिकारी व्यक्तियों का दायित्व है कि वे जैन संस्कार विधि को अधिकाधिक महत्त्व दें।'

सन्देश का दूसरा बिन्दु यह है 'गुरुदर्शन को भी रूढ़ि का रूप न दें। उत्साह अच्छा है, पर प्रतिस्पर्द्धा के साथ अधिक-से-अधिक व्यक्तियों को ले जाने का आग्रह नहीं होना चाहिए। यद्यपि देखादेखी करना व्यक्ति की अपनी दुर्बलता होती है। पर इस प्रकार की बात जब समाज में रूढ़ि के रूप में अपने पैर जमा लेती है, तब भारी पड़ती है। इसलिए कहीं भी नई रूढ़ि को पनपने का अवसर न दें। शुरू में ही सावधानी बरती जाए, यह आवश्यक है।'

१६ मार्च को प्रातः नौ बजे प्रातराश के पश्चात् डॉ. गेलड़ा से बात की। उन्होंने बताया कि कोटा ओपन यूनिवर्सिटी में उन्हें प्रोवाइस चांसलर का स्थान मिल रहा है। वहां निर्णय हो चुका है। प्रक्रिया चालू हो गई है। अब यहां के बारे में भी नई प्रक्रिया चालू करके निर्णय ले लेना चाहिए। मैंने कहा 'आप अच्छे स्थान पर जा रहे हैं, अच्छा है। आप कहीं भी रहकर हमारा गौरव बढ़ाएंगे, ऐसा विश्वास है।'

१७ मार्च को प्रेक्षा यात्रा में जानेवाली समणियां और मुमुक्षु बहनें गंगाशहर से यहां पहुंच गईं। उन्होंने महाश्रमणी की यात्रा का आंखों देखा हाल सुनाया और वहां के समाचार पत्रों के परिशिष्ट एवं धर्मजी चौपड़ा का पत्र प्रस्तुत किया। हमने पढ़ा, पुनः सुना। इतना अच्छा लगा कि उसका विवेचन नहीं किया जा सकता। हमारी अपनी कृति का कर्तृत्व सुनने/देखने से आनन्दानुभूति हो, यह सहज ही है। वहां से यहां आने का रास्ता भी तय कर लिया गया है। १४ अप्रैल को महावीर जयन्ती से एक दिन पहले यहां पहुंचने की संभावना है।

१८ मार्च को कन्हैयालालजी छाजेड़ गंगाशहर से आ गए। नाल के लोग कनकप्रभाजी को ले जाना चाहते थे। समझाने पर भी वे नहीं मान रहे थे। छाजेड़जी यहां से सन्देश लेकर गए। उनको सन्देश सुनाया तो सब खुश हो गए, मान गए। कनकप्रभा का वहां जाना कठिन पड़ता। और किसी से वे समझ सके, वैसी स्थिति नहीं थी। तब यहां के सन्देश ने काम किया। क्रम ठीक बन गया। कन्हैयालालजी समन्वयवादी एवं ठंडे व्यक्ति हैं। महासभा के अध्यक्ष हैं। काबिल व्यक्ति हैं।

२० मार्च, शुक्रवार। खेमजी सेठिया (भारती भूषण) गंगाशहर से यहां आए। एक दिन रहे। काफी कामों की देखभाल करके गए हैं। धुनी व्यक्ति हैं। कलकत्ता में मुनि सुमेर (लाडनूं) का चातुर्मास तय कराके गए हैं। इस बार का चातुर्मास दक्षिण कलकत्ता में हो, यह निर्णय कर दिया। कोई विशेष परिस्थिति नहीं हुई तो अग्रिम चातुर्मास हबड़ा में होगा, ऐसा घोषित हो गया। यह पहला अवसर है, जब कलकत्ता में किसी एक सिंघाड़े के लगातार चार चातुर्मास हुए हों। वास्तव में मुनि सुमेर ने बड़ी सूझबूझ से काम किया और कर रहा है। कलकत्ता में हलचल मच गई। युवा पीढ़ी के लिए एक रास्ता खुल गया। सबको मंजूर करना पड़ेगा, बल्कि आलोचकों को भी यह मानना पड़ रहा है कि मुनि सुमेर बहुत अच्छा काम कर रहा है।

२१ मार्च, शनिवार। आजकल ऐसा अनुभव हो रहा है कि स्वास्थ्य औषध-सापेक्ष हो गया है। औषध-ग्रहण में थोड़ा-सा इधर-उधर हुआ कि चेतावनी तैयार है। मुझे यह विवशता बिल्कुल नहीं आ रही है। कई बार परीक्षण भी करता रहा हूं, पर सफलता नहीं मिली है। औषध का प्रयोग नहीं ही करना, ऐसा कोई आग्रह नहीं है। विवशता न रहे, इतना मात्र अभीष्ट है।"

•

सप्ताह का प्रवचन (११)

प्रश्न राजा प्रदेशी का : समाधान केशी स्वामी का (१०)

—आचार्य महाप्रज्ञ

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। सब कुछ बदलता है। स्थायी, शाश्वत केवल अस्तित्व ही रहता है। कोई भी आकार, नाम, रूप स्थायी नहीं रहता।

आज हम बीदासर में हैं। पूछा जाए दो सौ वर्ष पहले यहां कौन-कौन व्यक्ति थे। नाम बताओ। पता नहीं कोई बता सकेगा या नहीं? दो सौ वर्ष पहले यह मकान कहां था? जिस भवन में हम बैठे हैं, पचास वर्ष पहले उसकी क्या स्थिति थी? लोग कहते हैं कि बड़ी विचित्र कहानी है।

नए का निर्माण और पुराने का विघटन होता रहता है। परिवर्तन तो होता है किन्तु परिवर्तन को स्वीकार करना बड़ा कठिन है। बदलाव को स्वीकार करना हर व्यक्ति के वश की बात नहीं है। कोई बहुत समझदार होता है, वही स्वीकार कर सकता है।

परिवर्तन को समझना बड़ा कठिन है। कोई समझाने वाला हो तो भी आसान नहीं है। केशी स्वामी जैसा समर्थ गुरु मिले और समझा दे तो अलग बात है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है। केशी स्वामी ने राजा प्रदेशी के दिमाग को बदल दिया, चेतना को बदल दिया। राजा प्रदेशी के बात समझ में आ गई।

राजा प्रदेशी बोला ‘मैं आपके मत को स्वीकार करता हूं। मैं जो मानता था जो शरीर है, वह जीव है और जो जीव है, वह शरीर है यह सही नहीं था। आपका यह मत सही है शरीर अलग है और जीव अलग है।’

केशी स्वामी ने कहा ‘स्वीकार करते हो तो पूरी बात को स्वीकार करो।’

राजा प्रदेशी ‘मुनिवर! मैं योजनाबद्ध तरीके से काम करूंगा।’

केशी स्वामी ‘योजना क्या है?’

‘मुनिवर! मैं अगर यहां से जाकर अपने परिवार को, अपने मित्रों को, अपने सामंतों को कहूंगा कि मैंने केशी स्वामी को अपना गुरु स्वीकार कर लिया, उनके विचार को मान लिया कि जीव अलग है, शरीर अलग है तो वे मानेंगे नहीं। वे सोचेंगे यह केशी स्वामी की हत्या करके आया है। मेरी साख तो बिक रही है। राजा इतना क्रूर है कि कोई भी भिन्न विचार वाला आए, उसे जिन्दा नहीं रहने देगा। या तो वह राजा के विचार को स्वीकार करे या मौत का आलिंगन करे। दूसरे को मैं सहन नहीं कर सकता। पहले मुझे इस धारणा को बदलने का प्रयत्न करना होगा।

‘मुनिवर! मैं राजभवन जाऊंगा, उन्हें समझाऊंगा, क्योंकि मैं जहां एक ओर राजा हूं वहां दूसरी ओर इस मत का प्रचारक हूं। जीव और शरीर एक है, दो नहीं है इस अनात्मवाद का, नास्तिकता का मैंने बहुत प्रचार किया है। सैकड़ों हजारों लोगों को इस मत का समर्थक बनाया है। इसकी सिद्धि के लिए इतने प्रयोग किए हैं। अब एकदम एक क्षण में जाकर यह कहूं कि मैं बदल गया तो क्या होगा? सबको अपने विश्वास में न लूं, उनको पूरी बात न समझा दूं तब तक मैं आपके मत को स्वीकार नहीं करूंगा। आपके विचार मेरे मन में जम गए हैं, पर जनता के सामने अभी अकेला आपका मत स्वीकार नहीं कर सकता। मैं सबको लेकर आऊंगा, सबके साथ मैं आपका शिष्य बनूंगा।’

‘दूसरी बात मैंने बहुत टेढ़े प्रश्न किए हैं, बहुत टेढ़ी बातें की हैं। आपको काफी कष्ट दिया है। मैं मानता हूं आप क्षमा के सागर हैं। आपके मन में कुछ नहीं आया होगा। पर मैं अपना धर्म मानता हूं, कर्तव्य मानता हूं मैंने आपके साथ जो टेढ़ा व्यवहार किया है, उसके लिए मैं क्षमायाचना करूं। वह भी अकेले में नहीं करूंगा, सबके सामने करूंगा।’

इसलिए महाराज! मैं एक बार अपने राजप्रासाद में जाता हूं। महारानी, पुत्र, परिवार, मंत्रीगण, सभासदों, मेरी गोष्ठी के लोगों को बुलाऊंगा। उनको यह बताऊंगा मैंने केशी स्वामी से लंबी चर्चा के बाद यह समझ लिया है कि शरीर अलग है और जीव अलग। मैं जो यह कहता था कि जीव और शरीर एक है, वह मेरा विचार गलत है।

अपने इतने पुराने विचार को इस प्रकार गलत कह देना साधारण बात नहीं है। बहुत कठिन बात है।

राजा प्रदेशी बोला मैं अपने विचार को गलत कहूंगा। आपके विचार को सत्य कहूंगा। फिर आपसे क्षमा याचना करूंगा। आपसे दीक्षा स्वीकार कर शिष्य बनूंगा। पर अकेला नहीं, सबके साथ। यह मेरी भावना है, योजना है।

केशी स्वामी बोले राजन्! तुमने बुद्धिमत्ता पूर्वक अच्छी योजना बनाई है। **अहासुहं!** तुम्हें जैसा सुख हो, कर सकते हो।

योजना प्रस्तुत कर राजा प्रदेशी अपने प्रासाद की ओर जाने लगे तब केशी स्वामी ने कहा 'प्रदेशी! तुम बड़े नीतिज्ञ हो। तुम्हारा ज्ञान भी बहुत विशद है। तुम बताओ। आचार्य कितने प्रकार के होते हैं?'

राजा प्रदेशी 'तीन प्रकार के होते हैं कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य।'

एक वह आचार्य, जो कला सिखाता है। प्राचीन काल में कलाओं का बहुत महत्त्व था। आज भी है पर उस समय अतिरिक्त था। जो कला को नहीं जानता, उसकी शादी भी मुश्किल से होती। आज तो लोग धन देखते हैं। उस समय कला और शिल्प को देखते थे।

दूसरे शिल्पाचार्य होते हैं। शिल्प में जीविका के साधन आते हैं। यंत्र शिल्प, काष्ठ शिल्प, कुंभ शिल्प घड़ा बनाना, बर्तन बनाना आदि शिल्प थे। शिल्पाचार्य का बड़ा महत्त्व था।

शाक्य वंश भगवान बुद्ध का वंश रहा। उसके राजकुमार की शादी होनी थी। सामने वाले पक्ष ने कहा यदि तुम्हारा पुत्र शिल्प नहीं जानता तो मैं तुम्हें अपनी पुत्री नहीं दूंगा। शिल्प के बिना अपनी आजीविका कैसे चलाएगा?

तीसरे होते हैं धर्माचार्य जो धर्म की कथा, वार्ता, उपदेश, देशना देते हैं।

केशी स्वामी ने पूछा 'राजन्! तीनों के प्रति क्या व्यवहार होता है?'

राजा प्रदेशी 'कलाचार्य का सम्मान किया जाता है, उपहार दिया जाता है। उसकी आजीविका के साधन रोटी, कपड़ा आदि दिए जाते हैं।

शिल्पाचार्य का भी सम्मान किया जाता है, उन्हें धन आदि दिया जाता है।

केशी स्वामी 'और धर्माचार्य...।'

राजा प्रदेशी 'वहां विनय की प्रतिपत्ति की जाती है।'

केशी स्वामी 'प्रदेशी! तुम तो अतिक्रमण कर रहे हो। मेरे साथ इतनी बातचीत की। इतना तत्त्व समझा फिर भी विनय की प्रतिपत्ति किए बिना सीधा जा रहे हो।'

राजा एक क्षण मौन रहा। प्रदेशी बोला 'महाराज! मैं नीति से अनभिज्ञ नहीं हूं। अनजान नहीं हूं। आपके प्रति मेरा क्या कर्तव्य है, यह भी मैं जानता हूं। यह भी मैंने कहा मैंने बहुत टेढ़े-मेढ़े प्रश्न किए, आपसे क्षमा याचना किए बिना मैं कैसे जाऊं? पर मेरे सामने प्रश्न है। मैंने आपको बताया था कि मैं आपसे खमताखमणा कर लूंगा। मैं यह कहूंगा कि मैंने केशी स्वामी से अर्हत् पार्श्व का धर्म स्वीकार कर लिया है तो कोई नहीं मानेगा। सब यही समझेंगे कि कहीं न कहीं केशी स्वामी का अनिष्ट करके आया है। मेरी बात पर विश्वास ही नहीं कर सकते।

जिसका जैसा विश्वास जमा हुआ है, उसे यकायक कैसे बदलेंगे? प्रदेशी तो ख्यातनामा है एक क्रूर और नास्तिक शासक, एक भोगवादी और ऐशोआराम करने वाला शासक। थोड़े से अपराध पर कठोर दंड देने वाला शासक। मुझे सब लोग जानते हैं कि मैं किसी धर्म को नहीं मानता, किसी धर्मगुरु को नहीं मानता, मेरे लिए धर्म-कर्म कुछ नहीं है। मेरे इस परिवर्तन को सहसा कौन स्वीकार करेगा? क्षमा करें गुरुदेव! मैं एक बार तो ऐसे ही जाता हूं। आपकी पूरी विनय-प्रतिपत्ति नहीं कर रहा हूं।

मैं अपने अंतःपुर को साथ में लाऊंगा। मैंने महारानी एवं रानियों को भी भोगवादी बना रखा है। उनकी आस्था को भी मैंने हिला रखा है।

अतःपुर, मंत्री परिषद् सबको साथ लाऊंगा...मैं उन्हें बताऊंगा पर उन्हें भरोसा नहीं होगा। मैं उनसे कहूंगा **'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्।'** हम केशी स्वामी के पास चलें। जो विचार मुझे जंचा है, उसमें संदेह करने की जरूरत क्या है? वहां साथ चलें, देख लेना कि नया विचार क्यों स्वीकारा है? मैं सबके साथ आपकी विनय प्रतिपत्ति करूंगा, खमतखामणा करूंगा और आपको गुरु स्वीकार करूंगा।'

केशी स्वामी ने उसके प्रस्ताव को उपयुक्त माना।

प्रदेशी योजनाबद्ध काम करता था। यदि वह तत्काल कह देता 'मैंने आपके साथ जो व्यवहार किया, उसके लिए खमतखामणा करता हूं।' ऐसा कह कर चला जाता और अपने निकटजनों को बताता तो कोई स्वीकार नहीं करता।

राजा ने केशी स्वामी को वंदना की। चित्त से कहा चलो, अब शहर में चलें। चित्त बड़ा खुश हो रहा है। आश्चर्य की बात चित्त राजा प्रदेशी का एकदम विश्वासपात्र। दोनों के विचार भिन्न। प्रदेशी एकदम नास्तिक और चित्त एकदम आस्तिक, आत्मा को मानने वाला और भगवान पार्श्व के सिद्धांत को जानने वाला, धर्म को समझने वाला और धर्म में विश्वास करने वाला। चित्त के मन में कितना हितकर प्रश्न था कि मैं राजा का सारथि, विश्वासपात्र और सर्वेसर्वा। मुझे जो इतना सम्मान देता है, वह मरने के बाद अच्छी गति में न जाए, दुर्गति में जाए तो मेरा निकट होना व्यर्थ जाएगा।

यह चिन्तन हर व्यक्ति में होना चाहिए यह मेरा निजी आदमी है, अच्छा आचरण नहीं है, बहुत झूठ बोलता है, चोरी करता है, शराब पीता है, भोग-विलास में समय गंवाता है, मरने के बाद इसकी गति अच्छी नहीं होगी? मैं इसका संबंधी हूं, निकट स्वजन हूं, मेरा काम है कि मैं इसे समझाऊं। अन्यथा मेरा निकट होना व्यर्थ हो गया।

चित्त के मन में यही प्रश्न उठा था। आज चित्त को बड़ी खुशी हो रही थी कि वह सफल हो गया।

चित्त जानता था कि मैं राजा को नहीं समझा सकता। मेरे में इतनी शक्ति नहीं है पर मुझे सौभाग्य से केशी स्वामी का योग मिला। उन्होंने जो श्रम किया, वह सफल हो गया। मैं भी धन्य हो गया। मुझे आज इस बात का गौरव है कि मैं राजा प्रदेशी का अभिन्न व्यक्ति हूं। मैंने अपना कर्तव्य निभा दिया और मैंने राजा को दुर्गति से बचा लिया।

क्रमशः...

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैन विश्वभारती में

१ जून। त्रिदिवसीय पारिवारिक सौहार्द कार्यशाला आज संपन्न हुई। मोमासर के निवासी एवं प्रवासी नागरिकों के लिए आरक्षित इस कार्यशाला में साठ से अधिक मोमासर निवासी-प्रवासी श्रावकों ने भाग लिया। कार्यशाला में मुनि किशनलालजी, मुनि धर्मरुचिजी, दिनेशकुमारजी, योगेशकुमारजी, नीरजकुमारजी, समणी मंगलप्रज्ञाजी, मुमुक्षु डॉ. शान्ता जैन, श्री बजरंग जैन आदि ने प्रशिक्षण दिया। सभी संभागियों को पूज्यवर की निकट उपासना का अवसर मिला। कार्यशाला बहुत सार्थक और उपयोगी रही। कार्यशाला की संयोजना में श्री पदमचन्दजी पटावरी, श्री के.एल. जैन, श्री कमल पटावरी, श्री सुखराज सेठिया, श्री अशोक संचेती आदि ने निष्ठापूर्ण श्रम किया।

आज भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन श्री ओमप्रकाश भट्ट ने निष्ठाशील श्रावक श्री सुमति गोठी के साथ दर्शन किए। आचार्यवर ने श्री भट्ट को हिंसा और अपराधमुक्त समाज के निर्माण में शक्ति के नियोजन की अभिप्रेरणा देते हुए कहा 'व्यक्ति के दिमाग में क्रोध, हिंसा, लोभ आवेश आदि प्रबल हैं। इससे समाज की समस्याएं जटिल बन रही हैं। इनके समाधान के लिए मस्तिष्कीय प्रशिक्षण जरूरी है।'

सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा को व्यापक बनाने की अपेक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए आचार्यवर ने कहा 'आर्थिक जगत की वर्तमान समस्याओं का समाधान सापेक्ष अर्थशास्त्र में खोजा जा सकता है।'

भारतीय स्टेट बैंक के चेयरमैन श्री ओ.पी. भट्ट ने आचार्यवर के मार्गदर्शन के अनुरूप कार्य करने का संकल्प व्यक्त किया। श्री भट्ट ने कहा 'मुझे आचार्यश्री के दर्शन से नई ऊर्जा और शक्ति मिली है। आपका पथदर्शन हमारे जीवन की समस्याओं के समाधान में बहुत उपयोगी है।'

जैन विश्वभारती के मंत्री श्री भीखमचन्द पुगलिया, सहमंत्री श्री भूरामल सामसुखा, प्रावस व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री शान्तलालजी बरमेचा आदि ने श्री भट्ट का साहित्य आदि के द्वारा सम्मान किया।

२ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने प्रातःकालीन प्रवचन में कहा 'भाषा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। ऐसे व्यक्ति विरल हैं जो भाषा शक्ति से संपन्न होने पर भी कुछ न बोलें। कुछ योगी साधक लम्बे समय तक मौन की साधना करते हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में भी ऐसे साधु-साध्वियां हुए हैं, जिन्होंने लंबे समय तक मौन की साधना की। मौन करना एक बहुत बड़ी साधना है।

जैसे मौन एक साधना है, उसी प्रकार बोलना भी एक प्रकार की तपस्या है। भाषा के द्वारा अनेक व्यक्तियों का भला किया जा सकता है। भाषा के द्वारा अनेक व्यक्तियों को एक साथ ज्ञान और संबोध दिया जा सकता है। भाषा वही अच्छी होती है, जिसके साथ विवेक जुड़ा होता है। हर व्यक्ति को संयत और योगयुक्त भाषा का प्रयोग करना चाहिए।'

३ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने प्रातःकालीन प्रवचन में कहा 'भाषा अवबोध देने वाली होती है। विभिन्न प्रकार की भाषाओं का ज्ञान होने से व्यक्ति विभिन्न प्रकार के विषयों का बोध कर सकता है।'

सत्य संभाषण की प्रेरणा देते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'व्यक्ति को हमेशा सत्य भाषा का प्रयोग करना चाहिए। सत्य पर अडिग रहने वाला व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है। सत्य की सदा विजय होती है।'

४ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने अपने प्रेरक प्रवचन में कहा 'जीवन का अभिन्न अंग है हमारा शरीर। यह जड़ और चेतन का योग है। शरीर से चेतना के अलग होने पर व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। मृत्य का तात्पर्य है शरीर और आत्मा का अलग-अलग होना।'

युवाचार्यश्री ने आगे कहा 'शरीर को धर्म का साधन माना गया है। इसके साथ-साथ यह व्याधि का मंदिर भी है। अच्छे और बुरे दोनों ही प्रकार के कार्य इस शरीर के द्वारा संपादित होते हैं। अपेक्षा है व्यक्ति को जो जीवन मिला है, उसका सही दिशा में उपयोग करे।

५ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपने प्रातःकालीन प्रवचन में शरीर की विनश्वरता की चर्चा करते हुए कहा 'यह शरीर नाशवान है। क्षण-क्षण इसका विनाश होता रहता है। एक युवा व्यक्ति में जो सौन्दर्य देखने को मिलता है, वह वृद्धावस्था आने पर कायम नहीं रहता। वृद्धावस्था आने पर व्यक्ति का रूप बदलने लगता है। हर व्यक्ति यह चिन्तन करे यह शरीर विनाशधर्मा है। इस विनाशधर्मा शरीर में विद्यमान आत्मा के कल्याण के लिए हमें सतत् प्रयत्नशील रहना है।'

पर्यावरण दिवस का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'पर्यावरण का संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। आदमी बाहर के पर्यावरण को स्वस्थ रखने के साथ-साथ अपने भीतर के पर्यावरण को भी स्वस्थ और पवित्र बनाए तो व्यक्ति का स्वयं का जीवन भी अच्छा हो सकता है।'

६ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज प्रातःकालीन प्रवचन में 'आहारक शरीर' का विशद विश्लेषण करते हुए कहा 'यह शरीर सबको प्राप्त नहीं होता। चतुर्दश पूर्वधर मुनि को यह शरीर प्राप्त होता है। आहारक वर्गणा से निष्पन्न होने वाला शरीर आहारक शरीर कहलाता है। अर्हतों की ऋद्धि को देखने के लिए चतुर्दशपूर्वी मुनि इस शरीर को धारण करता है।

आज चतुर्दशी के पावन दिन पर युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने हाजरी का वाचन किया। युवाचार्यश्री ने मर्यादापत्र की धाराओं का हृदयस्पर्शी विश्लेषण किया। लेखपत्र का उच्चारण बालमुनि अनुशासनकुमारजी एवं गौरवकुमारजी ने किया।

हरियाणा प्रान्तीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा का स्वर्णजयंती वर्ष

७ जून। आज आचार्यवर के सान्निध्य में हरियाणा प्रान्तीय जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के स्वर्णजयंती वर्ष का अंतिम चरण आयोजित हुआ। इस अवसर पर हरियाणा के सैंतीस क्षेत्रों के सैकड़ों भाई-बहन उपस्थित थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। आज प्रान्तीय सभा द्वारा श्री जगदीश जिन्दल को उनकी सेवाओं के लिए 'लाजवंती जैन समाज सेवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री रघुवीर जैन, श्री घीसाराम जैन, संरक्षक श्री पदम जैन आदि ने शाल एवं स्मृतिचिह्न प्रदान किया। इस वर्ष का लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड श्री लक्ष्मीसागर जैन को समर्पित किया गया। आज के कार्यक्रम में स्वर्णजयंती समारोह के उपलक्ष्य में प्रकाशित हरियाणा प्रान्तीय श्रावक समाज निर्देशिका का विमोचन किया गया। प्रान्तीय सभा के अध्यक्ष श्री रघुवीर जैन संपादक मास्टर नंदकुमार जैन, श्री लाजपतराय जैन आदि ने ग्रंथ की प्रथम प्रति पूज्य चरणों में उपहृत की। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा एवं श्रद्धेय युवाचार्यवर के प्रेरक वक्तव्य हुए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'स्वर्णजयंती के अवसर पर समाज को एक नया मोड़ लेना चाहिए। अनेक युवा कार्यकर्ता प्रान्तीय सभा के साथ जुड़े हैं, यह विशेष बात है। सभा का काम धर्मसंघ की गतिविधियों का संचालन करना है, इसलिए प्रान्तीय सभा शक्तिशाली होनी चाहिए। नैतिकता के बिना शक्ति अर्जित नहीं की जा सकती।'

आचार्यवर ने हरियाणा को नशामुक्त बनाने की अभिप्रेरणा देते हुए कहा 'हरियाणा के श्रावक समाज को नशामुक्ति अभियान चलाना चाहिए। जो प्रदेश नशामुक्त होता है, वह हर दृष्टि से शक्तिशाली बनता है और अपना विकास करता है।'

हरियाणा श्रावक समाज की उदात्त भक्ति भावना का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा 'भक्ति के साथ तत्त्वज्ञान का योग हो तो सोने में सुहागा हो जाएगा।' आचार्यवर ने इस अवसर पर हरियाणा के अनेक कार्यकर्ताओं की श्रद्धा-भक्ति एवं सेवाभाव का उल्लेख करते हुए उन्हें विशिष्ट संबोधन से संबोधित किया। आचार्यवर ने सुप्रसिद्ध उद्योगपति स्व. श्री ओमप्रकाश जिन्दल को 'शासनसेवी' एवं श्रीमती सावित्री जिन्दल को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष श्री गोविन्दजी मित्तल को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' एवं श्रीमती लक्ष्मी मित्तल को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया।

आचार्यवर ने श्री जगदीश जिन्दल, प्रो. डी. के. जैन, डॉ. सत्यभूषण जैन और डॉ. जे. बी. गुप्ता को 'कल्याणमित्र' एवं श्री नेमीचन्द जैन, श्री रघुवीर जैन (उकलाना), श्री लालमन जैन (कालांवाली), श्री हनुमानमल गुजरानी (सिरसा), श्री जगन्नाथ जैन (जाखल), श्री बलराज सिंगला (हिसार), स्व. श्री देशराज जैन (हिसार), स्व. श्री प्यारेलाल जैन, स्व. श्री शिवचन्द जैन (कापड़ो), स्व. श्री प्रकाशचन्द जैन (हिसार), स्व. श्री बनवारीलाल जैन (उचाना) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' तथा डॉ. सुशीला जैन को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया।

आचार्यवर ने आज टोहाना निवासी श्रीमती नर्बदादेवी जैन (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक लाला लाजपतराय जैन) को भी 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री सुरेन्द्रकुमार जैन एडवोकेट (भिवानी) ने किया।

८ जून। श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने प्रातःकालीन प्रवचन में तैजस शरीर का विशद विश्लेषण करते हुए कहा 'तैजस शरीर संसारी प्राणी के सदा साथ रहने वाला है। यह सूक्ष्म शरीर है। इसे विद्युत शरीर भी कहा जाता है। आहार आदि के पाचन में इसी शरीर की भूमिका होती है।'

तेजस् के महत्त्व का उल्लेख करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा 'जिस व्यक्ति में तेजस्विता है, शक्ति है, सामर्थ्य है, वह विकास कर सकता है। मनुष्य को अपनी शक्ति और तेजस्विता का सही उपयोग करना चाहिए। साधना के क्षेत्र में भी समता और तेजस्विता की आवश्यकता होती है। हम अपनी तेजस्विता को सदा साधना द्वारा वृद्धिंगत करते रहें।'

स्मृति-संबल

- इस्लामपुरा (प.बं.) प्रवासी श्रीमती रतनीदेवी बोथरा का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। वे पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी एवं सेवाभावी मुनि चंपालालजी की संसारपक्षीया भानजी थीं। मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि भूपेन्द्रकुमारजी की संसारपक्षीया मौसी एवं साध्वी चित्रलेखाजी की संसारपक्षीया नानीजी थीं। श्रद्धालु और धर्मपरायण श्राविका थीं। उन्होंने अपने जीवन में अनेक तपस्याएं कीं। सामायिक, संवर किए बिना मुंह में पानी न लेने का संकल्प था। उनके दिन का अधिकांश समय त्याग-प्रत्याख्यान में बीतता था। प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं उपासना का लाभ लेती थीं। उनका धर्मानुराग सदा प्रवर्द्धमान रहा। अंतिम समय में २७ घंटे के अनशन में समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को सार्थक कर लिया। समणी शारदाप्रज्ञाजी आदि समणियों ने अच्छा आध्यात्मिक सहयोग दिया। आचार्यवर ने स्व. श्रीमती रतनीदेवी बोथरा को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन से संबोधित किया है।
- कनाना निवासी, हुबली प्रवासी श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल का स्वर्गवास हो गया। वे श्रद्धालु एवं सेवाभावी श्रावक थे।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- नीमा निवासी एवं सादुलपुर प्रवासी श्रीमती केशरदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-स्व. श्री बालचन्दजी कोठारी) का स्वर्गवास हो गया। वे आस्थाशील एवं धर्मपरायण श्राविका थीं। स्वाध्याय, जप, संतदर्शन, सामायिक आदि उनकी दिनचर्या के अंग थे। त्याग-प्रत्याख्यान का अच्छा क्रम था। उन्होंने अपने परिवार को धर्म के अच्छे संस्कार दिए।
- बीदासर निवासी श्रीमती केसरदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व. श्री रतनलालजी सेठिया) का स्वर्गवास हो गया। वे जागरूक और श्रद्धालु श्राविका थीं। दान की अच्छी भावना रहती थी। जीवन के सान्ध्यकाल में अनशनपूर्वक समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया।
- लाडनूं निवासी, बोकारो प्रवासी श्रीमती भंवरीदेवी लूंकड़ का बाईस घंटे के अनशन में स्वर्गवास हो गया। वे श्रद्धालु एवं सेवाभावी श्राविका थीं। उधर जाने वाले साधु-साध्वियों की सेवा में सदा तत्पर रहती थीं। उन्होंने अपने परिवार को धर्म के अच्छे संस्कार दिए। पूरा परिवार संस्कारी और श्रद्धालु है।

सभी दिवंगत आत्माओं के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५५५५/- प्रेक्षा पुरस्कार से सम्मानित श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती शान्ताबाई सिंघवी (धर्मपत्नी-श्री एस. ए. माणकराज सिंघवी, चेन्नई-वंदवासी) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र बसंतराज, सुपौत्र मनोजकुमार, अरुणकुमार, डॉ. प्रवीणकुमार, मुदितराजकुमार, प्रपौत्र प्रतीक, प्रणव सिंघवी द्वारा प्रदत्त।

५१००/- शासनसेवी श्री जसवंतरायजी जैन एवं श्रीमती दर्शनमाला जैन (सुपुत्र एवं पुत्रबधू-स्व. लाला पारसदासजी जैन, हांसी-दिल्ली) के १८ जून को दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के अवसर पर उनके अनुज श्री कैलाश जैन, श्रीमती मंजु जैन, ऋतु एवं शिखा जैन, पीतमपुरा, दिल्ली द्वारा प्रदत्त।

५१००/- चि. जितेषकुमार (सुपुत्र-श्रीमती सरोजा-महावीरचन्द बरलोटा मूथा) सह सौ. रेखा (सुपुत्री-शिमलादेवी-महावीरचन्द संचेती) बेंगलोर के शुभ परिणयोत्सव के उपलक्ष्य में प्रदत्त।

३१००/- श्री जीतमल नाहटा (सुपुत्र-स्व. श्री संपतरामजी नाहटा, अनुज-शासनसेवी श्री माणकचन्दजी नाहटा) एवं श्रीमती आशादेवी नाहटा (सुपुत्री-स्व. सरदारमलजी लूणिया) के १८ जून को दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्ण जयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र अनिलकुमार, पुत्रबधू सुषमा, सुपौत्र कुणाल सुपौत्री मृदुला नाहटा, राजगढ़-कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री ओंकारलालजी कुचेरिया (जामनेर-खानदेश) की पुण्यस्मृति में उनकी सुपुत्री श्रीमती सिन्धुबाई-सुभाषचन्दजी लोढ़ा, शोभाबाई पदमराजजी सुराणा, एवं सुरेखा-राजेन्द्रजी लोढ़ा द्वारा प्रदत्त।

श्री राकेश कठोतिया जैविभा के कुलपति मनोनीत

निष्ठाशील श्रावक श्री राकेश कठोतिया (लाडनूं) को जैन विश्वभारती का कुलपति मनोनीत किया गया है। यह जानकारी जैन विश्वभारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रजी चोरड़िया ने दी है। श्री कठोतिया प्रबुद्ध और आस्थाशील श्रावक हैं। धर्मसंघ की अनेक गतिविधियों से सक्रियता के साथ जुड़े हुए हैं। बहुत-बहुत बधाई।

- १० जून को गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी का १३वां महाप्रयाण दिवस अत्यन्त श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस अवसर पर उत्तराखंड के राज्यपाल श्री बी. एल. जोशी और अनेक गण्यमान व्यक्ति उपस्थित थे। विस्तृत रिपोर्ट पढें आगामी विज्ञप्ति में।

कमलेश चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, पो. लाडनूं-३४१ ३०६, जि. नागोर (राजस्थान)
फोन : ०६४१४४१६५६७, ०६३५२४०४६४१, दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१
नोरतनमल दूगड़ (अध्यक्ष) फोन : ९२१४५१२३४६, बच्छराज कठोतिया (मंत्री) फोन : ९३११२३४६४१

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११० ००२ के लिए बच्छराज कठोतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११० ०३२ से मुद्रित। सम्पादक : **कमलेश चतुर्वेदी।**

www.terapanthinfo.com